

VASISHTHA GENESIS SCHOOL, BARDOLI.

Name: _____

Roll No. _____

Class: 8 Div: _____

Date: _____

Subject: Hindi (2L)

संवाद लेखन के उदाहरण

(1) रोगी और वैद्य का संवाद -

रोगी- (औषधालय में प्रवेश करते हुए) वैद्यजी, नमस्कार!

वैद्य- नमस्कार! आइए, पधारिए! कहिए, क्या हाल है ?

रोगी- पहले से बहुत अच्छा हूँ। बुखार उतर गया है, केवल खाँसी रह गयी है।

वैद्य- घबराइए नहीं। खाँसी भी दूर हो जायेगी। आज दूसरी दवा देता हूँ। आप जल्द अच्छे हो जायेंगे।

रोगी- आप ठीक कहते हैं। शरीर दुबला हो गया है। चला भी नहीं जाता और बिछावन (बिस्तर) पर पड़े-पड़े तंग आ गया हूँ।

वैद्य- चिंता की कोई बात नहीं। सुख-दुःख तो लगे ही रहते हैं।

कुछ दिन और आराम कीजिए। सब ठीक हो जायेगा।

रोगी- कृपया खाने को बतायें। अब तो थोड़ी-थोड़ी भूख भी लगती है।

वैद्य- फल खूब खाइए। जरा खट्टे फलों से परहेज रखिए, इनसे खाँसी बढ़ जाती है। दूध, खिचड़ी और मूँग की दाल आप खा सकते हैं।

रोगी- बहुत अच्छा! आजकल गर्मी का मौसम है; प्यास बहुत लगती है। क्या शरबत पी सकता हूँ?

वैद्य- शरबत के स्थान पर दूध अच्छा रहेगा। पानी भी आपको अधिक पीना चाहिए।

रोगी- अच्छा, धन्यवाद! कल फिर आऊँगा।

वैद्य- अच्छा, नमस्कार।

(2) सब्जीवाले और ग्राहक का वार्तालाप -

ग्राहक- ये मटर कैसे दिए हैं भाई ?

सब्जीवाला- ले लो बाबू जी ! बहुत अच्छे मटर हैं, एकदम ताजा।

ग्राहक- भाव तो बताओ।

सब्जीवाला- बेचे तो पंद्रह रुपये किलो हैं पर आपसे बारह रुपये ही लेंगे।

ग्राहक- बहुत महँगे हैं भाई!

सब्जीवाला- क्या बताएँ बाबूजी ! मण्डी में सब्जी के भाव आसमान छू रहे हैं।

ग्राहक- फिर भी । कुछ तो कम करो।

सब्जीवाला- आप एक रुपया कम दे देना बाबू जी ! कहिए कितने तोल दूँ?

ग्राहक- एक किलो मटर दे दो। और एक किलो आलू भी।

सब्जीवाला- टमाटर भी ले जाइए, साहब। बहुत सस्ते हैं।

ग्राहक- कैसे?

सब्जीवाला- पाँच रुपये किलो दे रहा हूँ। माल लुटा दिया बाबू जी।

ग्राहक- अच्छा ! दे दो आधा किलो टमाटर भी। और दो नींबू भी डाल देना।

सब्जीवाला- यह लो बाबू जी। धनिया और हरी मिर्च भी रख दी है।

ग्राहक- कितने पैसे हुए?

सब्जीवाला- सिर्फ़ इक्कीस रुपये।

ग्राहक- लो भाई पैसे।

(3) दो दोस्तों के बीच जीवन लक्ष्य को लेकर संवाद लेखन -

अनिल: "तुम दसवीं कक्षा के बाद कौन सा विषय लेने की सोच रहे हो?"

आदित्य: "मैं तो विज्ञान के विषय पढ़ूँगा।"

अनिल: "क्यों?"

आदित्य: "क्योंकि मैं बड़े होकर एक डॉक्टर बनना चाहता हूँ। तुम्हारे जीवन का क्या लक्ष्य है?"

अनिल: "मैं एक अध्यापक बनना चाहता हूँ।"

आदित्य: "एक डॉक्टर सबकी सेवा करता है, लोगों के दुःख दर्द दूर करता है। मैं भी बड़े होकर बीमार लोगों की सहायता करना चाहता हूँ।"

अनिल: "मैं विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करके उनके जीवन को उज्ज्वल बनाना चाहता हूँ। मेरे विचार में यह सबसे अच्छी मानव सेवा है।"

(4) दो मित्रों के बीच वार्षिकोत्सव पर संवाद लेखन -

अर्जुन - अंकुर! आज तुम विद्यालय क्यों नहीं जा रहे हो?
समय तो हो गया है।

अंकुर - मित्र! आज दोपहर के बाद हमारे विद्यालय का
वार्षिकोत्सव होना है। इसलिए मैं देर से जाऊंगा।

अर्जुन - आज तुम्हारे विद्यालय में उत्सव हैं तब तो वहां बड़ी
रौनक होगी। उत्सव का प्रबंध कौन कर रहा है?

अंकुर - उत्सव के प्रबंध के लिए कुछ छात्र-छात्राएं तथा शिक्षक
वहां उपस्थित हैं।

अर्जुन - चलो मित्र! हम दोनों चलते हैं। मुझे भी विद्यालय का
समारोह देखना है।

(दोनों मित्र विद्यालय जाते हैं)

अंकुर - *(विद्यालय पहुंचकर)* यह हमारा विद्यालय है। यहाँ
उत्सव की तैयारी में शिक्षकों के साथ अन्य कर्मचारी तथा कुछ
छात्र-छात्राएं लगे हुए हैं।

अर्जुन - ऐसा लगता है की समारोह प्रारम्भ होने वाला है। आज
उत्सव का कैसा कार्यक्रम है?

अंकुर - आज अनेक प्रकार का कार्यक्रम है। कुछ छात्र-छात्राएं
गीत गायेंगे, कुछ अभिनय करेंगे तथा कुछ खेलों का प्रदर्शन
करेंगे। फिर पुरस्कारों का वितरण होगा। अंत में सभाध्यक्ष का
भाषण भी होगा।

अर्जुन - क्या सभापति तुम्हें भी पुरस्कार देंगे?

अंकुर - मैं वार्षिक परीक्षा में अपनी कक्षा में प्रथम आया था,
मुझे भी पुरस्कार मिलेगा।

*(थोड़ी देर बाद समारोह प्रारम्भ हो जाता है। दोनों दोस्त बैठ
जाते हैं।)*

(5) पिता और पुत्र के बिच संवाद -

राहुल - पिता जी, मुझे अपने दोस्तों के साथ बाजार जाना है।

पिता - नहीं राहुल, तुम अपने दोस्तों के साथ रहकर घुमक्कड़
होते जा रहे हो। तुमने पढ़ना लिखना तो बिल्कुल ही छोड़
दिया है।

राहुल - नहीं पिता जी, अब मैं खूब पढ़ूंगा, वादा करता हूँ।

पिता - बेटे ऐसे वादे तो रोज करते हो।

राहुल - पर इस बार मैं पक्का वादा करता हूँ कि आपको 80%
से ज्यादा अंक ला कर दिखाऊंगा।

पिता - और अगर नहीं लाए तो..... !

राहुल - फिर आप जैसा कहेंगे, मैं वैसा ही करूंगा।

पिता - ठीक है। तुम्हें यह आखरी अवसर देता हूँ।

(6) पिता और पुत्र में वार्तालाप -

पिता - बेटे अतुल, कैसा रहा तुम्हारा परीक्षा-परिणाम?

पुत्र - बहुत अच्छा नहीं रहा, पिताजी।

पिता - क्यों? बताओ तो कितने अंक आए हैं?

पुत्र - हिन्दी में सत्तर, अंग्रेजी में बासठ, कामर्स में अस्सी,
अर्थशास्त्र में बहत्तर.....

पिता - अंग्रेजी में इस बार इतने कम अंक क्यों हैं? कोई प्रश्न
छूट गया था?

पुत्र - पूरा तो नहीं छूटा सबसे अंत में 'ऐस्से' लिखा था, वह
अधूरा रह गया।

पिता - तभी तो..... । अलग-अलग प्रश्नों के समय निर्धारित
कर लिया करो, तो यह नौबत नहीं आएगी। खैर, गणित तो रह
ही गया।

पुत्र - गणित अच्छा नहीं हुआ था। उसमें केवल पचास अंक
आए हैं।

पिता - यह तो बहुत खराब बात है। गणित से ही उच्च श्रेणी
लाने में सहायता मिलती है।

पुत्र - पता नहीं क्या हुआ, पिताजी। एक प्रश्न तो मुझे आता ही
नहीं था। शायद पाठ्यक्रम से बाहर का था।

पिता - एक प्रश्न न करने से इतने कम अंक तो नहीं आने
चाहिए।

पुत्र - एक और प्रश्न बहुत कठिन था। उसमें शुरू से ही ऐसी
गड़बड़ी हुई कि सारा प्रश्न गलत हो गया।

पिता - अन्य छात्रों की क्या स्थिति है ?

पुत्र - बहुत अच्छे अंक तो किसी के भी नहीं आए पर मुझसे
कई छात्र आगे हैं।

पिता - सब अभ्यास की बात है बेटे! सुना नहीं 'करत करत
अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।' तुम तो स्वयं समझदार हो।
अब वार्षिक परीक्षाएँ निकट हैं। दूरदर्शन और खेल का समय
कुछ कम करके उसे पढ़ाई में लगाओ।

पुत्र - जी पिताजी! मैं कोशिश करूंगा कि अगली बार गणित में
पूरे अंक लाऊँ।

पिता - मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।